A.Swathi, Lecturer in Hindi- Research Publications

S.No.	Title with Page No.	Name of the Journal (Scopus/ ICI/ Web of Science)	ISSN/ISBN No./ UGC List No.	Month / Period
1	"Sushela Thaakboure ke Saahity me Dalit Chetana yevam Nari Samvedana ke Swar"	Dlit Chethana ke Swar	ISBN 978-93-5627-066-4	March 2022
2	"Naari Vimarsh aur Saamajik Samarasata"	International Reffered Research Journal	ISSN-2348-4225	April-June 2022
3	"Yuva Bhooth Aur Bhavishy Ka Sethu"	Global Research Canvas. Peer reviewed Journal	ISSN 2394-5427	April 2023
4	"Hindi Sahity me Chitrit Samajik,Samskritik,Arthik,Rajanitikik, Samakalin Vimarsh"	NCDT-2023	ISBN:978-93-5917-000-8	July 2023
5	"Aadunik Kahaniyon Me Samajik Paripreksshy"	Yogyatha International Research Journal	ISSN 2348-4225	December 2023

1. “Sushela Thaakboure ke Saahity me Dalit Chetana yevam Nari Samvedana ke Swar”- Dlit Chethana ke Swar- ISBN 978-93-5627-066-4- March 2022.

दलित चेतना के स्वर

डॉ० घनश्याम भारती
डॉ० ओकेन्द्र, डॉ० राकेश सिंह रावत

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स, दिल्ली

दलित चेतना के स्वर

सम्पादक

डॉ० घनश्याम भारती, डॉ० ओकेन्द्र, डॉ० राकेश सिंह रावत

पीयर रिव्यू टीम

डॉ० दीपक पाण्डेय, सहायक निदेशक, शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार, नई दिल्ली
आचार्य पं० पृथ्वीनाथ पाण्डेय, भाषाविद्-समीक्षक-मीडिया अध्ययन-विशेषज्ञ, प्रयागराज
डॉ० डी० आर० राहुल, प्राचार्य, शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दतिया, मध्यप्रदेश
डॉ० शिव प्रसाद शुक्ल, प्रोफेसर हिंदी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

वैधानिक चेतावनी

पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन- फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक/ संपादक/ प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित शोध-पत्रों में निहित विचार तथा संदर्भों का संपूर्ण दायित्व स्वयं लेखकों का है। संपादक/ प्रकाशक इसके लिए उत्तरदायी नहीं है ।

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण : २०२२
ISBN 978-93-5627-066-4
प्रकाशक
जे०टी०एस० पब्लिकेशन्स
वी-५०८, गली नं०१७, विजय पार्क, दिल्ली-११००५३
दूरभाष : ०८५२७ ४६०२५२, ०११-२२६११२२३
E-Mail : jtspublications@gmail.com
मूल्य : ६६५.०० रूपये
आवरण : प्रतिभा शर्मा, दिल्ली
मुद्रक : तरूण ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली

Dalit Chetna ke Swar Edited by
Dr. Ghanshyam Bharti, Dr. Okendra, Dr. Rakesh Singh Rawat

१६. महिला सशक्तिकरण में डॉ० अम्बेडकर की भूमिका १७२
श्रीमती रेखा गुप्ता, डॉ० ज्योति मैवाल
१७. हिन्दी साहित्य में आख्यानमूलक प्रबन्धकाव्यों में दलित चेतना के स्वर १७६
प्रा० डॉ० गंगा एकनाथ भोळके
१८. संत शिरोमणि, कुलभूषण रविदास जी महाराज समता, समानता और मानवता के पैगंबर १८२
सोनू रजक
१९. सुशीला टाकभौरे के साहित्य में दलित चेतना एवं नारी संवेदना के स्वर १८५
ए० स्वाती
२०. हिन्दी लोक साहित्य : हलचल हरियाणवी के काव्य में व्यंग्य की हलचल १९०
डॉ० हरि राम
२१. दलितों की समस्याएँ : 'धरती धन न अपना' उपन्यास के संदर्भ में १९९
सौ० शितल सचिन खैरमोडे
२२. दलित चेतना : सावित्रीबाई फुले एक समाज सुधारक २०७
सुनीता प्रयाकर राव
२३. दलित साहित्य में दलित चेतना के स्वर २१३
प्रसादराव जामि
२४. 'गूंगा नहीं था मैं' काव्य-संग्रह में दलित चेतना २१७
सी०हेच०सुनील कुमार, प्रो०डॉ०पी०हरिराम प्रसाद
२५. डॉ० तुलसीराम की आत्मकथा 'मुर्दहिया' में दलित-चेतना २२४
कविता कोठारी
२६. शैलेश मटियानी की कहानियों में दलित २३३
देवराम
२७. सामाजिक समरसता के अमर नायक संत 'रविदास' २३९
अजय सिंह रावत
२८. वीरेन्द्र जैन के उपन्यासों में जाति-भेद २४६
शेक० शाहीना बेगम
२९. प्रेमचंद की कहानियों में दलित-चेतना के स्वर २५४
पूजा शर्मा

१६

सुशीला टाकभौरे के साहित्य में दलित चेतना एवं नारी संवेदना के स्वर

ए॰ स्वाती
हिन्दी प्राध्यापक
ए॰ एस॰ डी॰ गवर्नमेंट डिग्री कॉलेज,
काकिनाडा, पूर्व गोदावरि जिला, आंध्र प्रदेश
ई–मेल : swathigorgeous007@gmail.com
मोबाइल : 8331959528

सारांश :

सुशीला टाकभौरे हिन्दी दलित साहित्य की अग्रिणी महिला साहित्यकारों में से एक है। उन्होंने साहित्य की विभिन्न विधाओं जैसे, कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास, आत्मकथा, निबंध, वैचारिक लेखों के माध्यम से स्त्री और दलित चेतना का स्वर उभारा।

सुशीला टाकभौरे जी का जितना अनुराग अपने दलित सामाजिक सरोकारों को लेकर हैं, उतना ही निष्ठा नारी विमर्श के प्रति भी रही है। इसका आभास इसी बात से होता है कि उन्होंने इसके लिए अलग से दो निबंधकीय पुस्तकें लिखी और प्रकाशित की।

१. हिन्दी साहित्य का इतिहास में नारी।
२. भारतीय नारी : समाज और साहित्य के ऐतिहासिक संदर्भों में।

इसी तरह इनकी 'नंगा सत्य' (२००७), 'जीवन के रंग', 'रंग और व्यंग्य' जैसे रचनाओं के माध्यम से सामाजिक विद्रूपताओं, दलितों, के शोषण व अत्याचार समाज में फैला पाखंड का जमकर विरोध हुआ है।

प्रस्तावना :

सुशीला टाकभौरे ने अपने लेखन में स्त्री पक्ष और वर्षों से चली आ रही गलत रूढ़ी परम्पराओं के खिलाफ कलम चलाई तथा जीवन के बदलते संदर्भों को बहुआयामों से प्रस्तुत किया। इनकी रचनाओं के नारी पात्र बिगलित जड़ संस्कारों का तिरस्कार कर भूतकालीन पारंपरिक गलत रूढ़ियों के विरोध कर नई स्थितियों और मूल्य स्थापन का बोध देते हैं।

कहा जाता है कि सुशीला जी अपने लेखन में दलितों कि समस्याओं को वाणी देने का कार्य कर रही हैं परंतु इन्होंने नारी को दलित से भी दलित मानते हुए उनकी समस्याओं को स्पष्ट किया।

विषय विवेचन (आलेख का मुख्य भाग) :

स्त्री मुक्ति, स्त्री चेतना और शिक्षित स्त्री, ये सब में से सशक्तिकरण क्या है? निर्बल का सबल बनाने का प्रयास सशक्तिकरण है या शोषण के विरुद्ध आवाज उठाना सशक्तिकरण है? महिला सशक्तिकरण का अर्थ है, महिला को आत्मसम्मान, आत्मविश्वास प्रदान करना, अपने जीवन के निर्णय स्वयं लेने का स्वतंत्र मिलना। यदि कोई महिला अपने अधिकारों के बारे में सजग है, यदि उसका आत्म सम्मान बड़ा हुआ तो वह सशक्त है, समर्थ भी।

सुशीला टाकभौरे का जन्म मध्यप्रदेश के होशंगाबाद जिले की एक छोटे से गाँव बानापुरा में हुआ है। उनकी माताजी श्रीमति पन्ना घंवारी और पिताजी का नाम रामप्रसाद घाँवारी है। सुशीला जी को चार भाई और तीन बहनें हैं। सुशीला जी वाल्मीकी जाती की है। वर्णवादी, जातिवादी, विषमतावादी, सामाजिक रचना के अनुसार उन्हें अछूत माना जाता था। उस समय दलित, पिछड़ी जातियों के घर सवर्ण समाज कि बस्तियों से दूर गाँव के बाहर रहते थे। सुशीला जी के घर भी गाँव से अलग दूर था। १९६०–७० के बीच दलित समाज में लड़कियों का विवाह १५–१६ के उम्र में ही किया जाता था। जाति समाज के लोग

उनका विवाह कम उम्र में कर देने कहते थे। रिश्तेदारों और जाति संप्रदाय से रिवाज को देखते हुए उनकी पढ़ाई बेच में छोड़ देने को कहा। लेकिन आदर्शवादी सुशीला जी पिताजी का विरोध किया, पिताजी के सामने पढ़ाई आगे बढ़ाने की जिद की और पिताजी के सामने भूखहडताल भी। पिताजी उनकी बात मानी और पढ़ाई आगे बढ़ाने मजबूरी करनी पड़ी। इस प्रकार अपना संघर्षमय जीवन भोग करना पड़ा और इसी प्रकार का संघर्ष उनके अपने रचनों में भी हमें मिलती है।

सुशीला टाकभौरे की रचनाओं में दलित एवं नारी मुक्ति की स्वर देखने मिलते हैं। उन्होंने अनेक अवरोधों, बाधाओं, चुनौतियों को पार करने के बावजूद दलित साहित्य पर अपना लेखन जारी रखा। साहित्य की विभिन्न विधाएँ जैसे कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास, आत्मकथा, निबंध, वैचारिक लेखों के माध्यम से स्वयं को अभिव्यक्त किया है। स्वातिबूंद और खारे मोती, यह तुम भो जानो, हमारे हिस्से का सूरज, तुमने कब उसे पहचाना (काव्य–संग्रह), परिवर्तन जारी है (वैचारिक लेख), हाशिए का विमर्श (निवंध), वह लड़की तुम्हें बदलना ही होगा, नीला आकाश (उपन्यास), शिंकजे का दर्द (आत्मकथा), हिन्दी साहित्य के इतिहास में नारी का नजर (लेख), दलित साहित्य : एक आलोचना दृष्टि (आलोचना पुस्तक), मेरे साक्षात्कार, कैदी नं ३०७ इत्यादि इनकी प्रमुख व प्रसिद्ध रचनाएँ हैं।

साहित्य में उनकी पहचान कवयित्री व कहानीकार के रूप में होती है। सुशीला जी जव आठवीं कक्षा पढ़ती थी तभी अपने छोटे भाई मोहन के द्वारा कृष्ण जन्माष्टमी का व्रज रखने पर एक कहानी लिखी– 'व्रत और व्रती' चूंकी यह कहानी उनके कथा संग्रह "अनुभूति के घेरे" (१९९७) में प्रकाशित है। यह कहानी संग्रह आपसी प्रेम से ओतप्रेत है और ये भी एहसास करती है प्रेम पाने का नहीं त्याग की भावना का नाम है।

सुशीला जी का कहानी संग्रह 'टूटता वहम' में 'मंदिर का लाभ' कहानी अंधविश्वास को दर्शाती है। 'सिलिया', 'मेरा समाज', 'मुझे जवाव देना है', 'झरोखे', 'मेरा बचपन' इत्यादि कहानियों का स्वर जातिवादी और स्त्रीवादी विचार विमर्श का है। इनकी तीसरी कहानी संग्रह 'संघर्ष' से भरी हुई है। इनकी कहानियों में बदले की भावना भी है। "संघर्ष" कहानी में 'शंकर' और 'बदला' कहानी कल्लू सवर्णों का वदला मार–पिटाई से लेते हैं।

सुशीला टाकभौरे का दूसरा काव्य संग्रह पर अपना मंतव्य प्रकट किया "यह तुम भी जानो" (१९९४) यह काव्य दलित और नारीवादी है। इस काव्य संग्रह पर डॉ० सरजूप्रसाद मिश्र ने लिखा है कि दृ श्रीमति सुशीला टाकभौरे के इस काव्य संग्रह में प्रणय, शृंगार और प्रकृति अनुपस्थित है। अक्तूबर १९९३ में नागपूर में आयोजित "हिन्दी दलित लेखक साहित्य सम्मेलन" के बाद उनके सोच में काफी परिवर्तन आयी।

सुशीला जी का नया काव्य संग्रह "हमारे हिस्से का सूरज" (२००५) है। उनमें जो कविताएं है, वे दलितों के अतीत और वर्तमान की गहरी समझ की अभिव्यतियाँ मिली हैं। "हाशिए का विमर्श", परिवर्तन जरूरी है" निबंध संग्रहों में सुशीला जी वाल्मीकी जाति की जीवन शैली दिखाई है। अफसोस की बात है कि युवा पीढ़ी अपनी ताकत से बेखबर है वह चुपचाप पुरानी पीढ़ी के संरक्षण में, उनके दिखाये मार्ग पर अंधे के समान चली जा रही है। इसी तरह सदियाँ बीत गईं ।

सुशीला जी के 'नीला आकाश', 'वह लड़की', 'तुम्हें बदलना होगा' उपन्यास भी समाज जो एक नई दिशा देते नजर आती हैं।

सुशीला जी की आत्मकथा "शिंकजे का दर्द" (२०११) में प्रकाशित हुई। इस आत्मकथा में इनके जीवन के कड़े अनुभव का विवरण हैं। इस उपन्यास में संताप है दलित होने के साथ ही स्त्री होने का। इसमें शोषित, पीड़ित, अपमानित, अभावग्रस्त दलित एवं स्त्री

जीवन कि व्यथा है। विशेष रूप से सुशीला टाकभौरे का जीवन लेखन दलित समाज और स्त्री को केंद्र बिन्दु में रख कर किए गए विचार विमर्श और बातचीत का निष्कर्ष है।

निष्कर्ष :

सुशीला जी की सभी रचनाएँ चाहे वह दलित विमर्श से संबन्धित हो या नारी विमर्श से। उच्च आदर्शों एवं समतामूलक समाज के गठन से संबन्धित है। पुरुष प्रधान समाज में स्त्री मुक्ति, नारी स्वतन्त्रता तथा उनके अधिकारों को लेकर चाहे कितना भी बड़े दावे किए जाएँ सब व्यर्थ हैं। जब तक नारी स्वयं इस बात को नहीं समझती तब तक उसकी प्रगति हो ही नहीं सकती। नारी को समाज में सुरक्षा कैसे मिले इससे बेहतर यह है कि वह सुरक्षित कैसे बनें।

अतः निष्कर्षतः अंत में कहा जाता है कि माहिला दलित लेखकों में सुशीला टाकभौरे जी निश्चित ही एक बड़े स्थान कि अधिकारी है और भविष्य में भी वे अपनी कलम से महिला एवं दलित समाज का मार्ग प्रशस्त करती रहेगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

१. डॉ० अनु पाण्डेय (अप्रैल, १८, २०२१) – सुशीला टाकभौरे का संक्षिप्त जीवन परिचय।
२. डॉ० रेखा सेती, इंद्रप्रस्थ महिला महा विद्यालय, दिल्ली– सुशीला टाकभौरे की कविताओं, में, दलित और स्त्री पक्ष।
३. शिकंजे का दर्द दृ दलित एवं नारी मुक्ति का यादर्ध दस्तावेज दृ प्रथम संस्मरण, शिल्पायन, नई दिल्ली (२०११)।

2. Naari Vimarsh aur Saamajik Samarasata- “Yogyatha” International Reffered Research Journal-ISSN-2348-4225- April-June 2022.

आज़ादी का अमृत महोत्सव

आजादी का अमृत महोत्सव के सु अवसर पर

उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान, लखनऊ के व्दारा प्रायोजित

TWO DAY NATIONAL CONFERENCE ON

समकालीन कविता में सामाजिक समरसता और मानवमूल्य

SOCIAL HARMONY & HUMAN VALUES IN CONTEMPORARY POETRY

సమకాలీన కవితలలో సామాజిక సమరసత మరియు మానవ విలువలు

CERTIFICATE

This is to Certify that Dr./Mr./Ms. A. Swathi, Lecturer in Hindi A.S.D. Women's College KKD *participated/presented a paper/delivered keynote address/chaired Technical Session on* "नारी विमर्श और सामाजिक समरसता" *in the* NATIONAL CONFERENCE *entitled* Social Harmony & Human Vaues in Contemporary Poetry *will be held from 22nd to 23rd July 2022, Organized by* Department of Hindi with Telugu & English, *Pithapur Rajah's Govt. College (A), Kakinada, Andhra Pradesh, INDIA.*

Dr. Rajnarayan Sukla Chairman Uttarapradesh Basha Samsthan	Sri P.V. Krishna Rao Co-convenor	Dr. P. Hari Ram Prasad Convener	Dr. B.V. Tirupanyam Principal

PITHAPUR RAJAH'S GOVERNMENT COLLEGE

An Autonomous & NAAC Accredited "A" Grade Institution (CGPA-3.17)

(Affiliated to Adikavi Nannaya University, Rajahmahendravaram)

Raja Ram Mohan Roy Road, KAKINADA- 533 001.

Tel : 0884-2379489, Fax : 0884-2387888, Email: kakinada.jkc@gmail.com, Website: www.prgc.ac.in

योग्यता

अन्तरराष्ट्रीय त्रैमासिक शोध पत्रिका

आज़ादी का अमृत महोत्सव

आजादी का अमृत महोत्सव के तु अवसर पर
उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान, लखनऊ के व्दारा प्रायोजित

TWO DAY NATIONAL CONFERENCE PROCEEDINGS

समकालीन कविता में सामाजिक समरसता और मानवमूल्य

SOCIAL HARMONY & HUMAN VALUES IN CONTEMPORARY POETRY

సమకాలీన కవితలలో సామాజిక సమరసత మరియు మానవ విలువ

कार्यकारी संपादक :

डॉ. हरि राम प्रसाद पसुपुलेटी

Volume : 1 Edition : April - June 2022 ISSN : 2348 - 4225

- Social Sciences • Humanities
- Commerce & Management
- Language and Literature
- Law • Art • Development Studies

Yogyatha

International Referred Research Journal

Editor : Dr. D. Satya Latha

अनुक्रम

क्रम सं	विषय	नाम
1	समकाालीन कविता में सामाजिक समरसता और मानव मूल्य ः	प्रो आर एस सर्राजु
2	सामाजिक समरसता के प्रतीक महान संत कवि कबीर ः	प्रो एन सत्यनारायण
3	अंबेडकर और सामाजिक समरसता ः	डॉ जि वी रत्नाकर
4	समकालीन कविता मे अभिव्यत्त मानव मूल्य ः	डॉ पी के जयलक्ष्मी
5	संत कवियों की सामाजिक समरसता ः रज्जव वाणी के संदर्भ में	डॉ के नीरजा
6	संत साहित्य और मानव मूल्य ः	डॉ शेक वेनजीर
7	सामाजिक समरसता के घटक ः	एन हरि प्रसाद
8	संत कविता में सामाजिक समरासताा की भावना ः	पी उषा लावण्य, सि एच सुनीलकुमार
9	समकालीन हिन्दी कविता में मानमूल्य ः	डां वै वेंकट लक्ष्मी
10	समकालीन कविता और मानवमूल्य ः	सादी सुरेंद्र
11	समकालीन काव्य में सामाजिक जीवन का स्वरूप	डॉ वी लक्ष्मी
12	नारी विमर्श और सामाजिक समरसता	वासा उमाज्योति
13	हिन्दी उपन्यासों में मानवमूल्य की अभिव्यक्ति	डॉ एस सुभाषिणी
14	नारी विमर्श और सामाजिक समरासता	ए स्वाति
15	दलित कविता और सामाजिक समरसता	एन वि एन वी गणपतिराव
16	साहित्य और समाज	डॉ एम रामनथम, रवींद्र राथोड
17	समकालीन कविता और सामाजिक समरासता	एस के शर्मिला
18	साहित्य और मानवमूल्य ः	एस रम्या
19	नारी विमर्श और सामाजिक समरासता	वि रेवति
20	समकालीन कहानियों में दलित नारी	डॉ एन वेंकट रमण
21	समाजिक समरसता के जनक डॉ वावासाहेव अंवेडकर	डॉ पी हारिराम प्रसाद, डॉ के गौतम
22	नारी विमर्श और सामाजिक समरासता	मुंताज वेगम
23	हिन्दी साहित्य में मानवमूल्य	डॉ वि सरोजिनी

नारी विमर्श और सामाजिक समरसता

ए.स्वाति
हिंदी प्राध्यापक,
ए.एस.डी गवर्नमेंट डिग्री कॉलेज(w),(A),
काकिनाडा, आंध्र प्रदेश.
फोन 8331959528: e-mail – swathigorgeous007@gmail.com.

सामाजिक समरसता का अर्थ है, सामाजिक समानता अर्थात जातिगत भेदभाव एवं अस्पृश्यता का जड़ मूल से उन्मूलकर लोगों में परस्पर प्रेम एवं सौहार्द बढ़ाना । ऐसे सामाजिकसमरसताकेलिए स्त्री पुरुष समानता अत्यंत आवश्यक चीज है।अगर हम महिलाओं की आज की अवस्था को पौराणिक समाज की स्थिति से तुलना करें तो यह तो साफ दिखता है कि हालत में कुछ तो सुधार हुआ है, महिलाएं नौकरी करने लगी हैं, घर के खर्चों में योगदान देने लगी हैं, कई क्षेत्रों में तो महिलाएं पुरुषों से आगे निकल गई है। दिन प्रतिदिन लड़कियां ऐसे कीर्तिमान बना रही हैं जिस पर ना सिर्फ परिवार या समाज को बल्कि पूरा देश को गर्व महसूस कर रहा है।

आज अगर महिलाओं की स्थिति की तुलना सैकड़ों साल पहले के हालत से की जाए तो यही दिखता है, महिलाएं पहले से कहीं ज्यादा तेज गति से अपने सपने पूरे कर रहे हैं पर वास्तविक परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो महिलाओं को समाज की बेड़ियां तोड़ने में अभी भी काफी लंबा सफर तय करना है आज भी समाज की भेदभाव की नजरों से बचना महिलाओं के लिए नामुमकिनहो रहाहै।

महिलाओं को जन्म के बाद से ही समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है । अपने अधिकारों, समाज की रूढ़ियों, और अपनी स्वतंत्रता के लिए लड़ना महिला सशक्तिकरण का दर्द है। शिक्षा के माध्यम से पेशेवर स्थान पर महिलाओं को प्रोत्साहित करना, उनकी राय को स्वीकार करना,

और उन्हें वह अधिकार प्रदान करना जो वे चाहे। महिलाओं को किसी ऐसे व्यक्ति के साये के पीछे नहीं रहना चाहिए जो खुद को अभिव्यक्ति ना कर सके। महिला सशक्तिकरण का मुख्य उद्देश्य महिलाओं को दूसरों से आगे निकलने और समाज में समान अधिकार प्राप्त करने का मौका देना है।

प्रस्तावना

सामाजिक समरसता के लिए नारी सशक्तिकरण अत्यंत आवश्यक है। स्त्री मुक्ति, स्त्री चेतना, और शिक्षित श्री ये सब में से सशक्तिकरण क्या है?निर्बलको सबल बनाने का प्रयास सशक्तिकरण है? या शोषण के विरुद्ध आवाज उठाना सशक्तिकरण है? महिला सशक्तिकरण का असली अर्थ है महिला को आत्म सम्मान, आत्मविश्वास प्रदान करना अपने जीवन के निर्णय स्वयं लेने का स्वतंत्र मिलना यदि कोई महिला अपने अधिकारों के बारे में सजग है, यदि उसका आत्मसम्मान बड़ा हुआ तो वह सशक्त होती है तब समाज में समरसता स्थापित होती है।

आलेख का मुख्य भाग

सामाजिक समरसता में महिला शिक्षा अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारत के ग्रामीण इलाकों में आज भीमहिलाओं को उनके शिक्षा के अधिकार से वंचित किया जा रहा है। शिक्षा बाल विवाह को भी कम करेगी जो अभी भी कुछ हिस्से में प्रचलित हैं और अधिक जनसंख्या को नियंत्रित करने में मदद करता है। सरकार ने महिलाओं की शिक्षा के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए वर्षों से कई योजनाएं शुरू की हैं जैसे कि सर्वशिक्षा अभियान, ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड, बेटी पढ़ाओ बेटी बचाओ और बहुत कुछ शिक्षा महिलाओं को अच्छे और बुरे की पहचान करने, उनके दृष्टिकोण, सोचने की तरीके और चीजों को संभालने के तरीके को बदलने में मदद करती हैं। अन्य देशों की तुलना में भारतीय महिलाओं की साक्षरता दर कम है। शिक्षा सभी का

मौलिक अधिकार है और किसी को भी शिक्षा के अधिकार से वंचित नहीं किया जाना चाहिए। शिक्षा जीवन की आवश्यकताओं को पूरा करने में मदद करती है। घरेलू हिंसा या यौन उत्पीड़न के खिलाफ आवाज उठाने का आत्मविश्वास बदलाव का हिस्सा बने और शिक्षा की मदद से एक महिला को सशक्त बनाएं।

लैंगिक समानता भी विश्व स्तर पर एक प्रमुख चिंता का विषय है। लैंगिक समानता दोनों लिंगों को शिक्षा के सामान और समान संसाधन प्रदान करने से शुरू होती हैं। बालिकाओं की शिक्षा भी प्राथमिकता होनी चाहिए ना कि केवल एक विकल्प। एक शिक्षित महिला अपने और अपने आसपास के लोगों के लिए बेहतर जीवन का निर्माण करने में सक्षम होगी। समाज में महिलाओं के विकास के लिए लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण आवश्यक है। महिला सशक्तिकरण सुनिश्चित करता है कि प्रत्येक महिला को शिक्षा प्राप्त करने, पेशेवर प्रशिक्षण प्राप्त करने और जागरूकता फैलाने का अवसर मिले। हालांकि लिंग गुणवत्ता सुनिश्चित करेगी कि संसाधनों तक पहुंच दोनों लिंगों को समान रूप से प्रदान की जाएं और समाज भागीदारी सुनिश्चित की जाए। यहां तक पेशेवर स्तर पर भी महिलाओं को लैंगिक असमानता का सामना करना पड़ता है।

नारी आंदोलन और नारी विमर्श से अगर हम तुलना करते हैं तो कई बार हमारे सामने योग्य विद्वान हिंदुस्तान के परिप्रेक्ष्य में नारी संघर्ष की उपेक्षा की जा सकती हैं। इसके साथ साथ जितना कष्ट नारी ने हिंदुस्तान में झेला हैशायद ही किसी और मुल्क में झेला होगा। हिंदी केविमर्शात्मक लेखन पर भी इसी तरह का एक खास नजरिया चस्पा दिया है। और उसका मूल्यांकन चंद्र लेखिकाओं ने अपने ग्रंथों के आधार पर बनाया है और उसका यह एक सामान्य निष्कर्ष निकाला दिया है। बदलते समय में अनेक नारी से मिलते-जुलते अनेक सवाल आकर हमने चारों ओर से घेर रहे हैं। आज भी समाज रूपी कटघरे में खड़ा किया हुआ है। जो चिंता का विषय बना हुआ है। ऐसे में हिंदुस्तान के नारी संघर्ष के इतिहास को पुनः दोहराया जा रहा है।

हमने इस पर दोबारा से विचार करने की जरूरत है। दोनों एक दूसरे पर निर्भर है इसलिए किसी एक मुल्क में किसी खास वजह से चलने वाले नारी संघर्ष एकमात्र सार्वभौमिक सच नहीं हो सकता है।

समकालीन युग में नारीवाद, नारी अस्मिता, नारी विमर्श, नारी सशक्तिकरण जैसे सभी विषय विश्वव्यापी मुद्देहै। पुरुष प्रधान समाज में स्त्री मुक्ति, नारी स्वतंत्रता का तय, उनके अधिकारों को लेकर चाहे कितना भी बड़े दावें किए जाएं सब व्यर्थ है। जब तक नारी स्वयं इस बात को नहीं समझती तब तक उसकी प्रगति हो ही नहीं सकती, नारी को समाज में सुरक्षा कैसे मिले? इससे बेहतर यह है कि वह सुरक्षित कैसे बने।

निष्कर्ष

पुरुष और नारी समाज की दो मूलभूत इकाइयां हैं। दोनों के संयोग से समाज का सृजन होता है और सामाजिक समरसता भी। जब स्त्री अपने समाजिक परिवेश में अपने हिसाब से स्वतंत्र जीवन जी सकती हैं, तब वह परिवार और समाज में अपने अस्तित्व रख सकती हैं। सही समर्थन दिए जाने पर महिलाओं ने हर क्षेत्र में शानदार प्रदर्शन कर सकते हैं।

संदर्भ ग्रंथ

• हिंदुस्तान में नारी विमर्श और नारी संघर्ष- मनजीत सिंह.

• डॉ. रेखा सेथी- इंद्रप्रस्थ महिला महाविद्यालय- न्ईदिल्ली - सुशीला टाकभौरे की कविताओं में दलित एवं स्त्री पक्ष.

• शंकजे का दर्द- दलित एवं नारी मुक्ति का यथार्थदस्तावेज- प्रथम संस्मरण-नईदिल्ली(२०११).

3. Yuva bhooth aur bhavishy ka sethu- Global Research Canvas. Peer reviewed Journal- ISSN 2394-5427, April 2023.

St. Joseph's College for Women (A)

Visakhapatnam - 530 004

WAJA INDIA

REACCREDITED BY NAAC & ISO 9001: 2015 CERTIFIED

యువత సమగ్రాభివృద్ధిలో విద్య, సాహితీ సంస్కృతుల పాత్ర

युवा पीढी के समग्र विकास में शिक्षा, साहित्य और संस्कृति की भूमिका

यूनां समग्रविकासे शिक्षायाः साहित्य-संस्कृतेः च भूमिका

Role of Education, Literature & Culture in the Holistic Development of Youth

National Seminar Certificate

Certified that Mr. / Mrs. / Dr. A Swathi, ASD Govt Degree College, Kakinada has Participated / Presented a Paper in the Two-Day National Seminar on "Role of Education, Literature & Culture in the Holistic Development of Youth" jointly organised by the Language Departments, St. Joseph's College for Women (A) and Writers And Journalists Association of INDIA on 17th & 18th April 2023.

Title of the Paper: युवा - भूत और भविष्य का सेतु

Mr. Shivendra Prakash Dwivedi
Founder Secretary General
Writers and Journalists Association of India
New Delhi

PK Jayalakshmi

Dr. P.K. Jayalakshmi
Convener, National Seminar
HOD Second Languages
St. Joseph's College for Women (A), Vizag

Dr. Sr. Shyji P.D.
Principal & Correspondent
St. Joseph's College for Women (A),
Visakhapatnam

GLOBAL RESEARCH CANVAS

ISSN 2394-5427 multidisciplinary, peer-reviewed (refereed) journal

NATIONAL SEMINAR

17-18 April-2023

युवा पीढ़ी के समग्र विकास में शिक्षा, साहित्य और संस्कृति की भूमिका

యువత సమగ్రాభివృద్ధి లో విద్య, సాహితీ ,సంస్కృతు ల పాత్ర

Role of Education, Literature and Culture in the Holistic Development of Youth

Executive Editor
Dr. P.K. jayalakshmi

Editor
Manoj kumar

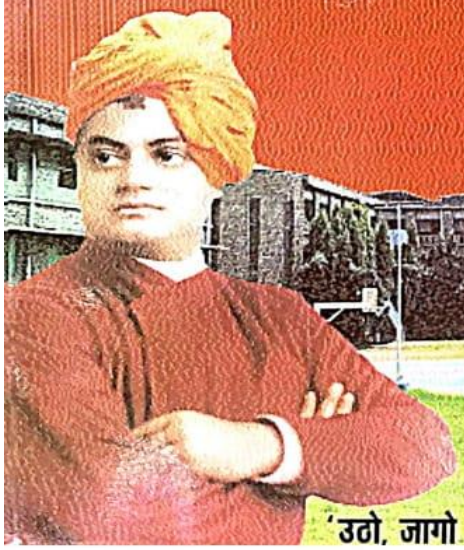

St. Joseph's College for Women (A)
Visakhapatnam - 530 004
REACCREDITED BY NAAC & ISO 9001: 2015 CERTIFIED

'उठो, जागो और तब तक रुको नहीं जब तक कि तुम अपना लक्ष्य प्राप्त नहीं कर लेते'

अनुक्रमणिका

सम्पादक की कलम से	15-16
युवा वर्ग के समग्र विकास की प्रासंगिकता में शिक्षा एवं साहित्य की भूमिका डॉ. एस. कृष्ण बाबू	17-19
भारतीय संस्कृति : युवा पीढ़ी के उदात्त संस्कारों की उत्कृष्ट आधारशिला आचार्य. पी.के. जयलक्ष्मी /डॉ. सिस्टर. पैजी. पी.डी.	20-22
आज की युवा पीढ़ी : भटकाव के कारण डॉ. वी. मणि	23-24
साहित्य और सिनेमा का युवा पीढ़ी पर प्रभाव कर्रा पृथ्वी	25-26
युवाओं को एक सकारात्मक दिशा में प्रशिक्षित करना जरूरी एन. इंदु वदना	27-28
युवा-पीढ़ी के सर्वांगीण विकास में मूल्य आधारित शिक्षा, साहित्य एवं संस्कृति डॉ. कर्रि सुधा	29-30
युवा पीढ़ी के समग्र विकास में हिंदी साहित्य का योगदान : रामदरश मिश्र के विशेष संदर्भ में डॉ. विंजनंपाटि यशोधरा यस.ए. हिंदी	31-34
शिक्षा, साहित्य और संस्कृति का अंत:संबंध और युवा पीढ़ी डॉ. के. अनिता	35-36
युवाओं के रचनात्मक सोच में शिक्षा, साहित्य और संस्कृति की भूमिका डॉ. वी. रवीन्द्र नायक /डॉ. अल्ताफ पाशा. डी.एम	37-40
समसामयिक शैक्षिक जगत का विकृत रूप और आज का युवा वर्ग मिर्जा मासुमे फातिमा	41-43
तेलुगु भाषा का लोकसाहित्य डॉ. बी. तीरूमला देवी	44-45
युवा पीढ़ी के समग्र विकास मे शिक्षा का योगदान लिंगम चिरंजीव राव	46-48
रोजगार मूलक हिन्दी - जनसंपर्क अधिकारी डॉ. ई. राजा कुमार	49-50
हिंदी की उन्नति में अनुवाद का योगदान डॉ. के. श्याम सुन्दर	51-52
शिक्षा, साहित्य और संस्कृति की युवा पीढ़ी का समग्र विकास में योगदान के. वी. राजेश्वरी	53-54
युवा भूत और भविष्य का सेतु ए. स्वाति	55-56

युवा भूत और भविष्य का सेतु

ए. स्वाति
हिंदी प्राध्यापक,
ए.एस.डी गवर्नमेंट डिग्री कॉलेज(2),(A), काकिनाडा, आंध्र प्रदेश.

सारांश

युवा देश और समाज की रीड की हड्डी होती है। युवा देशऔर समाज को शिखर पर ले जाते हैं। युवा देश का वर्तमान है तो भूतकाल और भविष्य के सेतु भी हैं। युवा देश और समाज के जीवन मूल्यों के प्रतीक हैं। लेकिन देखने में आ रहा है कि आज की युवाओं में नकारात्मकता जन्म ले रहीहैं, उनमें धैर्य की कमी है।वे हर वस्तु अतिशीघ्र प्राप्त कर लेना चाहते हैं। वे आगे बढ़ने के लिए कठिन परिश्रम की बजाय शॉर्टकट्स खोजते हैं, भोग विलास और आधुनिकता की चकाचौंध उन्हें प्रभावित करती है। उच्च पद,धन दौलत, और ऐश्वर्य का जीवन उनका आदर्श बन गए हैं। अपने इस लक्ष्य को प्राप्त करने में जब वे असफल हो जाते हैं तो उनमें मानसिक तनाव का भी शिकार हो जाते हैं। युवाओं की इस नकारात्मकता को सकारात्मकता में परिवर्तन करने की शक्ति शिक्षा संस्कृति और साहित्य में है।

शब्द संकेत : युवा, साहित्य शार्टकट्स, तनाव, शिक्षा, सपने, राष्ट्र

प्रस्तावना :

युवा में गहन ऊर्जा और उच्च महत्वाकांक्षा से भरने का काम साहित्य लेता है तो उनकी आंखों में भविष्य के इंद्रधनुषी सपना भरने का काम शिक्षा करती हैं और समाज और अपने आप को बेहतर बनाने का काम संस्कृति करता है।

साहित्य का उद्देश्य मनोरंजन करना मात्र नहीं है। इसका उद्देश्य समाज का मार्गदर्शन करना है। आधुनिक काल के प्रमुख विचारक रामचंद्र शुक्ल ने साहित्य को जनता का संचित प्रतिबिंब माना जाता है। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने साहित्य को ज्ञान राशि का संचित कोष माना है और पंडित बालकृष्ण भट्ट ने साहित्य को जनसमूह के हृदय का विकास माना है। लेकिन आज की युवा पीढ़ी के बारे में कहा जाता है कि साहित्य से उसे कोई लगाव नहीं है। कुछ तो रोजगारपरक शिक्षा के दबाव में और कुछ आधुनिक सूचना तकनीकी के मोह में यह पीढ़ी साहित्य किताबों से दूर होती गई है। इसके पीछे एक वजह पढ़ने योग्य साहित्य का ना लिखा जाना भी बताया जाता है। कारण जो भी हो पर युवा पीढ़ी के साहित्य से विमुखता को समाज के लिए बड़े खतरे के रूप में रेखांकित किया जाता है। साहित्य से संवेदना का विकास होता है और संवेदना के अभाव में व्यक्ति में हिंसक और क्रूर वृत्तियां पायी जाती हैं। विचारों ने साहित्य को जन्म दिया है और साहित्य ने मानवीय विचारधारा को गतिशीलता प्रदान की है। इतिहास साक्षी है कि किसी भी राष्ट्रीय समाज में जितने भी परिवर्तन आए हैं, वे सब साहित्य के माध्यम से ही आए हैं। साहित्यकार समाज में फैली कुरीतियों, विसंगतियों, विषमाताओं तथा असमानताओं के बारे में लिखता है इनके प्रतिजनमानस को जागरूक करने का कार्य करता है जब सामाजिक जीवन में नैतिक मूल्यों का पतन होने लगता है तब साहित्य ही जनमानस का मार्गदर्शन करता है।

संस्कृति-कहा जा सकता है कि कोई भी पेड़ तय तक ही जीवित रह पाता है जब तक वह अपनी जड़ों से जुड़ा रखता है।

समाज में व्यक्ति की वे जड़ें संस्कृति हैं,जिससे जुड़ा रहना व्यक्ति के लिए आवश्यक होता है। संस्कृति से कटा हुआ व्यक्ति कटी डोर की पतंग की भांति होता है जो उड़ तो रहा होता है लेकिन मंजिल का रास्ता तय नहीं होता है, ना ही पता होता है कि वह कहां जाएगा। वर्तमान परिदृश्य में समाज को देखें तो पता चलता है कि युवा पीढ़ी अपनी संस्कृति को दिन प्रतिदिन पीछे छोड़कर आगे आधुनिकता की अंधी दौड़ में शामिल होते जा रहे हैं। संस्कृति संस्कार ऐसे अंग है जिनसे समाज तय होता है। हमारे देश प्रदेश की संस्कृति व संस्कार वैश्विक मंच पर आदर्श स्थान पा रहे हैं। भारतीय जीवनशैली को विश्व में सबसे श्रेष्ठ व सभ्य माना जाता रहा है, लेकिन समय के चक्र पाश्चात्य प्रभाव ने कई संस्कृतियों के संस्कार को अधिक कर रख दिया। आज अधिकांश लोग संस्कृति व संस्कारों के साथ जीने को पिछड़ापन मानते हैं लेकिन पिछले हुए तो उन्हें कहा जा सकता है जो अपनी संस्कृति व संस्कारों से छिटककर अपना पाश्चात्यकरण कर चुके हैं।

शिक्षा- युवा के लिए बहुत ही आवश्यक है क्योंकि शिक्षा के द्वारा ही युवा के जीवन में ज्ञान का प्रकाश होता है। जब युवा के जीवन में ज्ञान का प्रकाश होता है, तब वह अपने विकास के लिए आगे बढ़ता है और अपना विकास करने के साथ-साथ अपने देश का भी विकास करता है। युवा ही देश की रीड की हड्डी होती हैं और युवा का शिक्षित होना बहुत ही जरूरी है। शिक्षा प्राप्त करके युवा हर क्षेत्र में एक सफल इंसान बन सकता है। शिक्षा के बिना व्यक्ति के जीवन में अंधकार रहता है, अंधकार को व्यक्ति के जीवन से सिर्फ शिक्षा ही दूर करती हैं।

शिक्षा से व्यक्ति ज्ञान प्राप्त करता है और ज्ञान प्राप्त करने के बाद वहहर क्षेत्र में कार्य करने से पहले उस कार्य को जिस तरह से करना है उसके बारे में पूरी रणनीति तैयार करता है। जब वह अपने ज्ञान के माध्यम से रणनीति तैयार करता है तब उसे सफलता अवश्य प्राप्त होती हैं। आज जिस देश में युवा शिक्षितहुए हैं उस देश का विकास अवश्य हुआ है। यह 21वीं सदी है जहां हर समय कुछ ना कुछ नया सीखना ही सफलता का मानदंड है। भारत युवाओं का देश होने के बावजूद बेरोजगारी यहां की सबसे बड़ी समस्या है। जब युवा शिक्षित होगा तभी एक नए समाज का निर्माण होगा जब युवा शिक्षित होंगे तब समाज के अंदर जो बुराइयां हैं, वह बुराइयां नष्ट हो जाएंगे क्योंकि शिक्षा से ही अज्ञान का नाश होता है। पिछले समय में समाज में कई तरह की बुराइयां थी जिस बुराई को युवा पीढ़ी के द्वारा ही खत्म किया गया है क्योंकि युवा पीढ़ी शिक्षा की ओर बढ़ रहे हैं। आने वाले समय में युवा पीढ़ी के द्वारा ही देश का विकास होने वाला है। जब युवा शिक्षा के क्षेत्र में कदम रखता है तब वह ज्ञान प्राप्त करता है और उससे अपना विकास प्राप्त कर सकता है।

निष्कर्ष :

आवश्यकता इस बात की है कि बड़े लोग बच्चों के सम्मुख एक ऐसा आदर्श ऐसा प्रस्तुत करें जिससे वे अपना सके दूसरों को सुधारने के उपदेश देने की अपेक्षा हम स्वयं को सुधारें। कबीर जी के शब्दों में 'बुरा जो देखन में चला बुरा न मिलिया कोई जो दिल खोजा आपना मुझसे बुरा ना कोई'। जब तक मां-बाप को भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति की वास्तविकता, महानता, गौरव का ज्ञान नहीं होगा बच्चों को क्या सिखाएंगे? यह सामूहिक प्रयास प्रत्येक व्यक्ति निजी तौर से शुरू करें। हम शिक्षा में परिवर्तन की बात करते हैं। यह परिवर्तन कौन करेगा? बच्चे तो स्वयं नहीं करेंगे, बच्चों को जो सामग्री पढ़ने के लिए हम विद्यालयों में देते हैं उनमें हमारे प्राचीन और महान संस्कृति और सम्प्रदायों को वर्तमान संदर्भ में डालकर बच्चों तथा युवाओं को पढ़ाने के लिए दी जानी चाहिए, इससे उन्हें सदाचार,उदात्त भावनाएं तथा श्रेष्ठ जीवन मूल्य मिलेंगे। परिवर्तन अवश्य रहेगा।

संदर्भ ग्रंथ

1. मालवीय डॉ. सौरभ, देश और समाज के उत्थान में युवाओं की भूमिका।
2. मल्ला डॉ. रमेश, जनसत्ता।
3. डोगरा प्रो. मनोज संस्कृति से अलग होती युवा पीढ़ी।
4. डॉ.अरुण, शिक्षा और युवा पर निबंध।

4. “Hindi Sahity me Chitrit Samajik,Samskritik,Arthik,Rajanitikik, Samakalin Vimarsh” NCDT-2023 ISBN:978-93-5917-000-8- July 2023.

NCDT 2023

1st National Conference on "Design Thinking - Trans Disciplinary Challenges & Opportunities"

7th & 8th July 2023

Organized by

Dr. B. R. Ambedkar Chair, Andhra University

In Collaboration with

Andhra University Trans-Disciplinary Research Hub

Certificate of Presentation

This certificate is given to

A Swathi

has presented a paper entitled "Hindi Sahitya Me Chitrit Samajik,Samskrtit, Aarthik, Rajanitik,Samakalin Vimarsh." in the 1st National Conference on "Design Thinking: Trans-Disciplinary Challenges & Opportunities". The paper has been published in the conference proceedings titled "NCDT-2023" [ISBN: 978-93-5917-000-8]

Session Chair

Convenor & General Chair

2023 1st National Conference on

Design Thinking: Trans-Disciplinary Challenges & Opportunities

Copyright and Reprint Permission: Abstracting from this book is allowed, provided proper credit is given to the original source. Libraries are authorized to make photocopies of articles in this volume that bear a code at the bottom of the page, exceeding the limit established by India's copyright law, for the private use of their patrons.

Copyright @ 2023 by Dr.B.R. Ambedkar Chair, Andhra University and Andhra University Trans-Disciplinary Research Hub. All rights reserved, including the right of reproduction in whole or in part in any form

Title: Design Thinking: Trans-Disciplinary Challenges & Opportunities in Arts and Law

Editor: Prof. M. James Stephen, Dr. B.R. Ambedkar Chair Professor, Andhra University
Dean, Trans-disciplinary Research Hub, Andhra University.

Co Editors Dr. Veerraju Govada, HoD, Department of Political Science, Andhra University.
Dr. S. Haranath, HoD, Social Work, Andhra University.
Dr. Raja Manikyam, Department of English, Andhra University

Personal use of the material in this book is permitted. However, any reprinting or republishing of this material for advertising or promotional purposes, creating new collective works for resale or redistribution to servers or lists, or reusing any copyrighted component of this work in other works requires prior permission.

Disclaimer
The authors are responsible for the contents published in this book. The Publisher, Editors and Editorial Representatives don't take any responsibility for the same in any manner. Errors, if any are purely unintentional and readers are requested to communicate such errors to the editors or publishers to avoid discrepancies in future.

ISBN: 978-93-5917-000-8

PREFACE

Dear Distinguished Delegates and Guests,

Welcome to "Design Thinking and Trans-disciplinary Opportunities and Challenges in Arts & Law," an inspiring anthology that explores the convergence of design thinking with the realms of arts and law. As the editor of this edited book, it is my privilege to present this collection of thought-provoking chapters that illuminate the synergies and complexities within these multidisciplinary domains.

Design thinking, renowned for its human-centered approach and innovative problem-solving methodologies, has transcended traditional boundaries and found fertile ground within the fields of arts and law. This book serves as a platform to explore the rich interplay between design thinking, artistic expression, and legal frameworks, paving the way for transformative collaborations and novel approaches.

Within these pages, you will encounter a tapestry of insights, experiences, and intellectual explorations that shed light on the vast opportunities and intricate challenges at the intersection of arts and law. Esteemed contributors, including artists, legal scholars, practitioners, and researchers, have meticulously crafted chapters that examine diverse aspects, from the incorporation of design thinking in legal processes to the transformative role of creativity in shaping legal frameworks.

As the editor, I am deeply grateful for the dedication and intellectual rigor demonstrated by the contributors. Their commitment to scholarship, artistic practice, and legal expertise has enriched the depth and breadth of this publication, making it a valuable resource for scholars, practitioners, and enthusiasts seeking to explore the transformative possibilities at this interdisciplinary crossroads.

I would also like to extend my sincere appreciation to the anonymous peer reviewers, whose rigorous evaluations and valuable feedback have contributed to the scholarly integrity and relevance of the chapters. Their expertise and discerning insights have played an instrumental role in shaping this book into a comprehensive exploration of the intersections between design thinking, arts, and law.

Finally, I extend my heartfelt gratitude to the readers who embark on this intellectual journey. It is through your engagement, curiosity, and open-mindedness that the true impact of this book will be realized. I encourage you to embrace the diversity of perspectives presented within these pages, to reflect on the opportunities and challenges they reveal, and to envision a future where design thinking and trans-disciplinary collaborations reshape the landscapes of arts and law.

Prof. James Stephen Meka
Dr. B.R. Ambedkar Chair Professor
Andhra University

CONTENTS

Preface

Committees

NCDT 2023 Track 1

A Study of the Appraisal of the Financial Performance of the RRBs in Rural Development (With Special Reference to Andhra Pragathi Grameena Bank of Kadapa District of Andhra Pradesh) 1
Ovuku Yedukondalu, A Prabhakar

Design Thinking-Social Innovation-Online Education System 9
Veeramalla Sreenivasarao, Aparna Rao Yeramilli

Unleashing Market Potential: Exploring Marketing Opportunities for Solar-Powered Electric Vehicles in the Sustainable Transportation Sector 17
P Kusuma Kumari, Sudha Rani Patnala

Performance Analysis of Venture Indian Capital Financing Institutions in 2022: A Study 26
Gorla Siva Rama Krishna, K Venkata Nagaraj

The Impact of Visual Merchandising on Customers' Buying Decisions 33
Mamidi Rupusundara Rao, K V Nagaraj

Design Thinking in Social Entrepreneurship 38
Kondru Venkata Ganesh, Aparna Yerramilli

A Study on Stress Management and Occupational Performance among Female Lecturers in Telangana 44
Pardhasaradhi Yennam, A Sairoop

How Design Thinking Is Disrupting HR: A Review of Literature 50
Elesetty Sivakalyan Kumar, Sairoop Allena

Whistle blowing in the Banking Sector - A SWOT Analysis 56
Kiran Kumari, Sairoop Allena

The Role of Design Thinking in Effective Decision Making in Management 63
Gowthu Suresh Pradeep, Aparna Rao Yerramilli

Impact of Work Stress on Employee Performance in the IT Sector 73
K Yamini Bhargavi, L Radha Krishna

A Study on the Role of Design Thinking in Entrepreneurship 80
Bhuvankumar Dama, D Bhuvankumar

The Creative Spark: How Engineers Ignite Innovation 86
Paparao Areti, Aparna Yerramalli, Venkata Ganesh Kondru

Role of MSMEs in Enhancing Design and Development Capabilities of the Indian Defense Sector: Opportunities and Challenges 96
Konada Subramanya Parameswara Kumar, Chandra Sekhar Patro

Jaanapada Pradarshna Kalarupam - Tholu Bommalata: Oka Parisheelana 760
Kapavarapu Anil Babu, Praveen D

Banjaraala Achaaralu - Pandugalu 765
Gottapu Eswara Rao, Praveen D

The Effect of Indian Cinema on Generation Z: A Sociocultural Analysis 770
Karra Pruthvi

Lok Sahitya Ek Samanya Parichay 782
K Anitha

Mytreyi Pushpa Vyaktitv aur Krutitv 786
Suhasini Unkili

Dalit Sahitya Ke Svar 790
Kakara Mutyalarao

Raneandra Ji Ki Kahaniyo Me Aadivasi Jeevan Sangarsh 795
Nunna Sujatha

Yuvapeedi Ke Vikas Me Shiksha Our Vartaman Hindi Upanyaso Ka Yogdaan 800
P Bheema Bai

Vartaman Hindi Katha Jagat Me Rajanitik Evam Prashasanik Vyang 806
Komma Venkata Rajeswari

Panchatantre Parisankalpanaa Chinthanam 810
Saketi Satyanarayana,Pola Umamaheswara Rao

Samaj Our Samskriti Ke Pratibimb - Cinema Me Chitrit Samakalin Jeevan 815
K D V B Prasad

Hindi Sahitya Me Chitrit Samajik,Samskrtit, Aarthik, Rajanitik,Samakalin Vimarsh. 819
A Swathi

Patra Patrikavo Ka Mahatv 823
N Jyotsna

NCDT 2023 Track 11

The Great Reincarnation of Ethnic Groups into Climate Refugees – Human Right Concerns 827
K Pallavi

The Relation between Drugs and Crimes: An In-depth Analysis 832
K M K Sri Bhargavi

The Misconstrued Revelation - Ambedkar's Thought of Uniform Civil Code and its Analysis 836
Harshitha Devaguptapu

Is India Ready For LGBTQ+? 840
M Pardha Saradhi

Uprooting 'Perjury' 842
Rayasam Durga Praveen

5. Aadunik Kahaniyon Me Samajik Pariprekshy. Yogyatha International Research Journal, ISSN 2348-4225- December 2023.

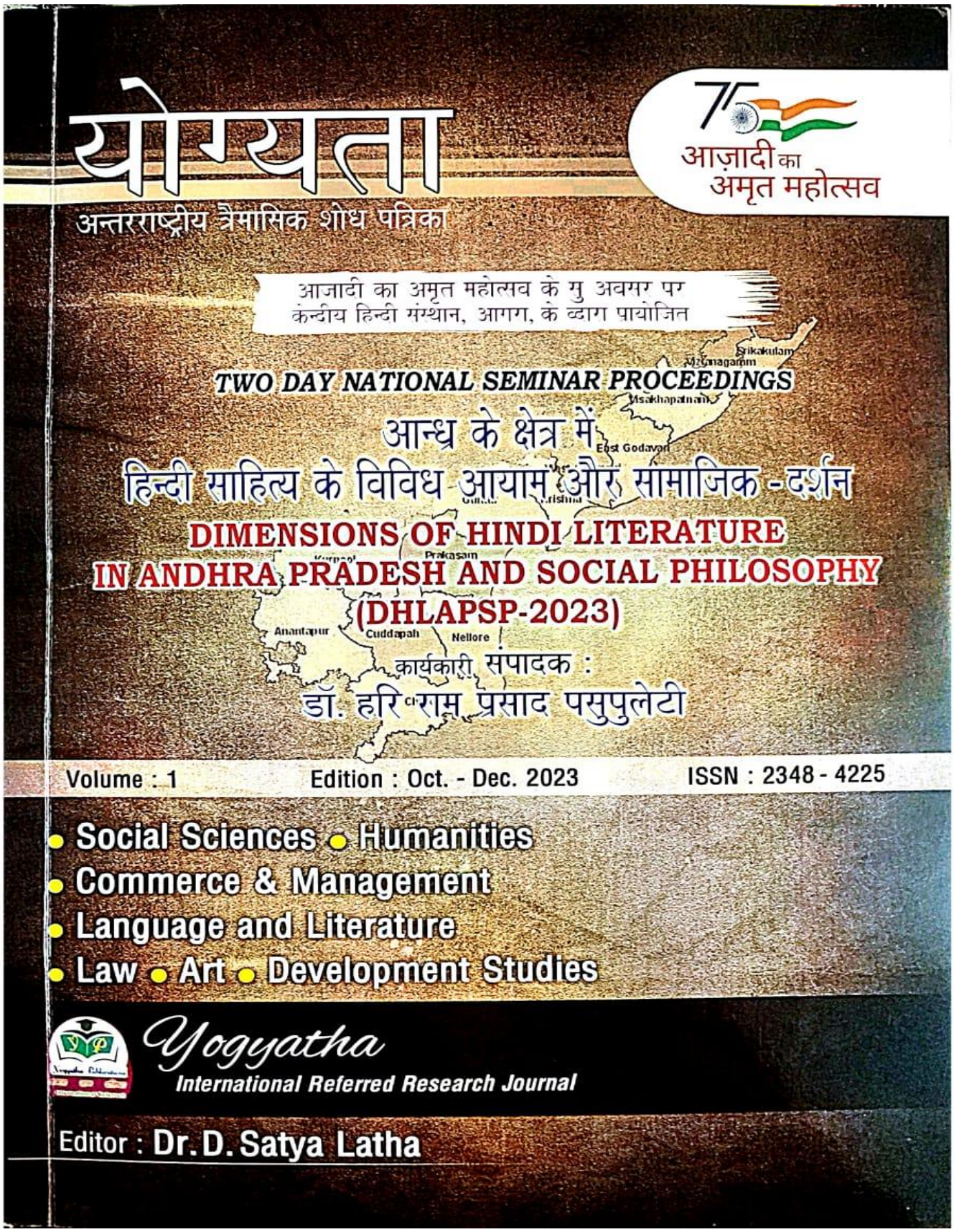

आज़ादी का अमृत महोत्सव

CENTRAL INSTITUTE OF HINDI : AGRA

Certificate

This is to certify that Sri / Smt / Dr. / Prof. A. Swathi

of A.S.D. Women's college, Kakinada has participated in the National Seminar on "ANDHRA KE KSHETRA ME HINDI SAHITYA KA VIVIDHA AYAM AUR SAMAJIK DARSHAN" Conducted by Departments of Hindi, Philosophy & English in collaborated with CENTRAL INSTITUTE OF HINDI : AGRA during 7 - 8 December 2023 at P.R.Government College (Autonomous), Kakinada

He / She has acted as resource person / presented a paper entitled _____

_____

Dr. GANGADHAR WANODE	Dr. B.V. TIRUPANYAM	Sri K. ANJANEYULU	Dr. P. HARI RAM PRASAD	Kum. CH. VENNILA
Regional Director	Director	Co-ordinator	Convenor	Co-Convenor
CENTRAL INSTITUTE OF HINDI	& Principal	& Vice Principal	Head, Dept. of Hindi	Head, Dept. of English
Hyderabad				

अनुक्रम

क्रम सं	विषय	नाम
1.	आंध्र के क्षेत्र में हिन्दी साहित्य के विविध आयाम और समाज – दर्शन	– आचार्य आर एस सर्माजु
2.	आंध्र के महान कवि आलूरी बैरागी जी	- आचार्य वी सुभा
3.	हिन्दी साहित्य के मूल्यों की अभिव्यंजना	- आचार्य एन सत्यनारायण
4.	कुसुमा धर्मन्ना की कविताओं में अंबेडकरवादी चेतना	- डॉ जी वी रत्नाकर
5.	आंध्र प्रदेश में हिन्दी पत्रकारिता	- डॉ पेक बेनजीर
6.	आचार्य पी आदेस्वर राव की कविताओं में व्यक्ति और समाज	- डॉ के श्यामसुंदर
7.	वीरशैव संप्रदाय के प्रयोगवादी तेलुगु कवि पी सोमनाथ	- डॉ डी सत्यलता
8.	वालशौरी रेड्डी कृत – जिंदगी की राह उपन्यास में नारी	- डॉ के अनीता
9.	आंध्र प्रदेश के महान हिन्दी प्रेमी	- डॉ आर श्रीदेवी
10.	ध्येय समर्पित हिन्दी साहित्यकार आचार्य एस ए एस एन वर्मा	- डॉ पी के जयलक्ष्मी
11.	मध्यकालीन हिन्दी साहित्य की आन्ध्रों की देन	- डॉ के नीरजा
12.	कथा साहित्य और सामाजिक मूल्य	- एन वी एन वी गणपतिराव
13.	डॉ वालशौरी रेड्डी के उपन्यासों में स्त्री विमर्श	- डॉ एस सुरेन्द्र
14.	साहित्य और सामाजिक मूल्य	- एन हरी प्रसाद
15.	दक्षिण के प्रमुख कवि आचार्य पी आदेस्वर राव	- डॉ एन वेंकट रमण
16.	साहित्य के धनी डॉ वलशौरी रेड्डी	- डॉ एस सूर्यावाती
17.	कहानियों में सामाजिक मूल्य	- ए स्वाति
18.	आचार्य पी आदेस्वर राव की कविताओं मे नारी – सौंदर्य	- डॉ के कृष्ण
19.	साहित्य का सामाजिक शासत्र	- अमृता श्री मानेपल्ली
20.	हिन्दी साहित्य सेवा में आलूरी बैरागी चौधरी	- डॉ श्रीलता
21.	आलूरी बैरागी के कविताओं में व्यक्ति और समाज	- सी एच सुनील कुमार, डॉ पी हरीराम प्रसाद
22.	डॉ वलशौरी रेड्डी के उपन्यासों का विहंगावलोकन	- वी तिरुमलदेवी
23.	समाज ,साहित्य और संस्कृति का अंतर संबंध	- जी गोवर्धन
24.	हिन्दी साहित्य का क्षेत्र में आन्ध्रों का समकालीन जीवन	- के पृथ्वी
25.	साहित्य और समाज	- एस रम्या , पेक प्यारी
26.	कवियर डॉ पी आदेस्वर राव	- राधा कुमारी
27.	साहित्य और सामाजिक मूल्य	- मडिकी स्वरूपा प्रवीण

कहानियों में सामाजिक परिप्रेक्ष्य

ए. स्वाति
हिंदी प्राध्यापक,
ए.एस.डी गवर्नमेंट डिग्री कॉलेज(w),(A),
काकिनाडा , आंध्र प्रदेश.

समाज और साहित्य, दोनों ही मानव संस्कृति के महत्वपूर्ण हिस्से हैं। इन दोनों के बीच संबंध गहरे और अभिन्न होते हैं। समाज में जाति वर्ग ऐसे कई विभाग रहते हैं। इन सब के अलग-अलग आचार विचार और नैतिकता के अलग-अलग मापदंड है। इस स्थिति में संपूर्ण मानव जाति की भलाई और संपूर्ण मानव जाति का एक नैतिक मान का उज्जवल सपना सामाजिक चेतना से ओतप्रेत कोई लेखक ही देखने का साहस करेगा। मिथिलेश्वर जी वर्ग्गत और समाजगत विषमताओं के बीच में भी संपूर्ण समाज की भलाई और पूरे समाज के लिए एक नैतिक मान का सपना देखने वाला रचनाकार है। सामाजिक सदृढ़ता एवं विकास में गहरी आस्था रखने वाला साहित्यकार, मानव जाति के प्रगति अभियान में मशाल वाहक वन जाता है। आज तक के आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक विकास के फलस्वरूप मानवता अब जिस नये धरातल पर पहुंच गई है, उसे उसी धरातल पर टिके रखने के लिए मनुष्य की सद्वृत्तियों को प्रोत्साहित करना है। मनुष्य में जो पश्विकथा है, जो तमस श्रुति है उनके दामन करने में या उन्हें काबू में रखने में सहायता प्रदान करना सामाजिक प्रतिबद्धता रखने वाले लेखक का कर्तव्य है। इस कर्तव्य को निभाते समय जीवन के घोर यथार्थ से या जीवन के वीभत्स रूप से मुह मोड़ना अपने कर्तव्य और ईमानदारी के प्रति बेईमानी माने जाएगी। मिथिलेश्वर ने अपनी कहानी यात्रा में कहीं भी इस प्रकार की बेईमानी नहीं की है।

प्रस्तावना

समाज संगठन की दृष्टि से आज का मानव समाज पहले से ही कहीं अधिक न्याय पर जोर देता है। ऐसी स्थिति में सामाजिक अन्याय और उत्पीड़न के खिलाफ आवाज उठाना समकालीन लेखकों का फर्ज बन जाता है। इस प्रकार करने में जरूर लेखक की सामाजिक चेतना निहित रहती है। मिथिलेश्वर ने अपने कहानियों के माध्यम से सामाजिक अन्याय और उत्पीड़न के विरुद्ध अपना क्षोभ प्रकट किया है।

आलेख का मुख्य भाग

साहित्यकारों का अपने समय और समाज पर प्रभाव रहता है। समाज को पूर्ण रूप से बदलने की शक्ति शायद साहित्य में नहीं होती, लेकिन एक बदलाव के लिए समाज को तैयार कर लेने में साहित्य का बड़ा महत्वपूर्ण स्थान होता है। मिथिलेश्वर जी सामाजिक परिवर्तन लाने में साहित्य को केवल एक साधन ही मानते हैं। उनकी रचना धार्मिकथा भी इसके अनुरूप रहती है। अनुभवहीन, विग्रह बाबू, बोर होने से पहले जैसे कहानियों में मिथिलेश्वर जी ने जिन बातों की चर्चा की है, जिन स्थितियों की यथार्थ अभिव्यक्ति की है उनका गहरा प्रभाव समाज पर जरूर पड़ जाएगा पाठकों में एक विशेष बेचैनी पैदा करने में यह प्रभाव सफल बना है। अपने भविष्य के प्रति कभी आस्वस्थ ना रहने वाली एक पीढ़ी को और अधिक अनास्वस्थ कर देने वाली हैं ये रचनाएं। मिथिलेश्वर निम्न मध्य वर्ग के कथाकार होने के कारण उनके कहानियों में मध्यवर्ग की मानसिकता ही नहीं, मध्यवर्गीय मानोग्रस्तियां, दीनता, दासता और अवसदागुन, विडंबना सभी के संवेदनात्मक विंवन उपस्थित है। मिथिलेश्वर जी की संवेदना और चेतना दोनों प्रेमचंदीय स्तर की है। समसामयिक मध्यवर्गीय युव पीढ़ी के क्षोभ और आक्रोश के सशक्त वक्त के रूप में मिथिलेश्वर की गणना होती है। मध्यवर्गीय युवा पीढ़ी की आशा आकांक्षाओं, दुख दर्दों और वेचैनियों को उन्होंने वाणी दी है। मध्यवर्गीय नारी की स्थिति पर उन्होंने ध्यान दिया था। अंधविश्वास हो और रूढ़ियों के सतत विरोध के द्वारा मिथिलेश्वर की कहानियों ने समाज को प्रगति के मार्ग में अग्रसर होने में सहायता

पहुंचाई है। मिथिलेश्वर की अनुभवहीन कहानी उसी प्रवृत्ति की परिलक्षित होती है । मिथिलेश्वर जी मूलतः ग्रामीण जीवन के कथाकार के रूप में उभरे और प्रख्यात हुए हैं। गांवों के जीवन की अनुभूतियों ने ही मिथिलेश्वर के कथा साहित्य का गठन किया है। ग्रामीण जीवन को उसकी परिपूर्णता के साथ चित्रित करने का प्रयास मिथिलेश्वर ने किया है। दूसरा महाभारत, तिरिया जन्म, बोर होने से पहले जैसे कहानी संग्रहों में रिपोर्ताज की तरह सीधे सारे ढंग से गांव की दशा का बयान है। एक और हत्या कहानी में आर्थिक दृष्टि से विपन्न ग्राम वासियों की दुर्दशा का चित्रण है। रात अभी बाकी है कहानी में भारत के गरीब किसान के बारे में बताया। उनकी दूसरा महाभारत कहानी संग्रह पारिवारिक जीवन से ओतप्रेत है। हरि हर काका कहानी भी संयुक्त परिवार पर लिखी गई कहानी शेष जिंदगी संगीता बनर्जी बाबूजी नरेश बाबू ना चाहते हुए भी जैसे कहानियां नई जीवन से संबंधित है मिथिलेश्वर जी की कई कहानियां है उन सब की चर्चा हम यहां नहीं कर सकते हैं लेकिन मिथिलेश्वर के समस्त कहानी एक महत्वपूर्ण लक्ष्य की पूर्ति के साधन है वह है सामाजिक चेतना के द्वारा व्यक्ति चेतना का परिष्कार।

निष्कर्ष

मिथिलेश्वर के कहानियों का अध्ययन के बाद निसंदेह बता दिया जा सकता है कि उनका प्रत्येक कहानी सामाजिक बलाई को लक्ष्य करके लिखा गया है अपने यह में सफलता पाने के लिए उन्होंने समकालीन समाज का गहरा अध्ययन किया है अनुभूत साथियों के आधार पर पूरी ईमानदारी के साथ उन्होंने युग सत्य को वाणी दी है। मिथिलेश्वर की कहानियों में व्यक्ति और समाज को समान स्थान दिया है एक दूसरे से घटकर या बढ़कर प्रतीत नहीं होता।

संदर्भ ग्रंथ:

*साहित्य और आधुनिक युगबोध - देवेंद्र यादव
*भोर होने से पहले, एक गांव की अन्य कथा
*शेष जिंदगी, बाबूजी
*दूसरा महाभारत